Chapter-5

अध्याय-५

मन्नू भंडारी

के

कथा साहित्य

में

आर्थिक

समस्याएँ

प्रास्ताविक :

आजादी के बाद भारतीय सामाजिक जीवन के आर्थिक परिवेश में बहुत अंतर आया है। आज अर्थ ही जीवन का मूल्य बन गया है। व्यक्ति का मूल्यांकन अर्थ के आधार पर किया जाने लगा। अर्थ के बिना व्यक्ति का जीवन दिशाहीन एवं व्यर्थ है। परिणाम स्वरूप अर्थ के पीछे भागनेवालों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आज सत्ता,धन-दौलत, प्रतिष्ठा के पीछे लोग आँखे बंद किए हुए दौड़ रहे हैं। इस कारण नैतिकता में गिरावट आयी है। भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, बेईमानी आदि मनोवृत्तियाँ मुंह फैलाये समाज को निगलने के लिए बैठी हुई नजर आती हैं। आज के व्यक्ति का जीवन कपट, दुश्मनी, संत्रास, बिखराव एवं विश्वासों से भरा हुआ हो गया। आजादी के बाद समाज में आर्थिक परिवर्तन करने के लिए भारत सरकार ने पंचवर्षीय योजनाओं का गठन किया, लेकिन समाज व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं आया। आज स्वतंत्रता मिलने के पश्चात् भी गरीब लगातार गरीब होता जा रहा है और धनी अधिक धनिक होता गया।

भारत कृषिप्रधान देश है। आजादी के बाद कृषि में अनेक सुधार करने के प्रयास किये जाने लगे, लेकिन यह प्रयास कम मात्रा में किए गये। सिंचाई की सुविधा भी आज तक किसानों को पूरी तरह उपलब्ध नहीं हुई है। फलतः किसानों की स्थिति दयनीय है। साथ-साथ देश की जनसंख्या भी बढ़ती गई। इसी कारण भ्रष्ट शासन व्यवस्था, बेकारी, अनैतिकता, अपराध, महानगरों का विस्तार आदि फेलने लगा, इस कारण भारतीय आर्थिक परिस्थिति में वृद्धि कम हुई। आज आदमी आरामतलब बनने लगा। वह हर नयी चीज का उपभोग करने की कामना करने लगा , इसीलिए भ्रष्टाचार, अनैतिकता और अमानवीयता को बढ़ावा मिल गया। आज अर्थहीन लोग अधिक अर्थहीन हो गये और अर्थसंपन्न लोग अधिक संपन्न हो गये। देश की बहु संख्यक जनता का जीवन अर्थ के अभाव में अर्थहीन हो गया। आर्थिक विषमता की जड़ें और अधिक मजबूत हो गयी।

मन्नू जी ने अपने कथा साहित्य में आर्थिक समस्या के विविध रूपों का चित्रण किया है।

आर्थिक समस्याएँ :

व्यक्ति विकास, समाज विकास, राजनैतिक चेतना आदि चीजें अर्थसत्ता से बहुत प्रभावित हैं। हमारे समाज की अनेक समस्याओं के जड़ में अर्थ प्रक्रिया काम कर रही है। आधुनिक नारी स्पष्ट वक्ता और स्वावलंबन बनने के पीछे अर्थ ही काम कर रहा है। आर्थिक दृष्टि से नारी आत्मनिर्भर होने के कारण बहुत आगे बढ़ गयी है। वह शिक्षिका से लेकर अध्यापिका, प्रिंसिपल, पायलोट, सेनाअध्यक्षा और यहाँ तक कि प्रधानमंत्री की कुर्सी तक पहुँची है। उसके मूल में शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता है। आज नारी अपने पैरों पर खड़ी है। आज वह स्वतंत्र है। उसकी भी एक अलग विचारधारा है। वह पुरुष से कंधों से कंधा मिला रही है और विविध क्षेत्रों में अपना योगदान दे रही है।

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में इस समस्या का चित्रण विविध रूपों में

मिलता है ।

गरीबी की समस्या :

हमारा देश कृषिप्रधान देश है । इस देश में आर्थिक विषमता अधिक है । अर्थ की दृष्टि से निम्नलिखित वर्गों में विभाजित है -

१. निम्न वर्ग

२. मध्य वर्ग

३. उच्च वर्ग

निर्धनता सामाजिक एवं आर्थिक समस्या है । गरीबी की समस्या देश के लिए ही नहीं बल्कि विश्व के लिए बहुत बड़ी समस्या है । भारत में अनेक परिवार गरीबी में सड़ रहे हैं । अनगिनत लोग फुटपाथ पर सड़ रहे हैं और भीख मांग रहे हैं । गरीब और अमीर के बीच गहरी खाई है । इस विषमता के पीछे औद्योगीकरण का बड़ा हाथ रहा है । गरीबी बढ़ती जाने के पीछे बढ़ती हुई जनसंख्या, सामाजिक कुप्रथाएँ, अज्ञानता, अशिक्षा, पूंजीवाद आदि कारण जवाबदार हैं । इस समस्या का चित्रण अनेक लेखक-लेखिकाओं ने अपने साहित्य में किया है ।

गरीबी का चित्रण मन्नू जी ने 'खोटे सिक्के', 'सजा' आदि कहानियों में किया है । 'सजा' कहानी में एक मध्यवर्ग का आदमी जब कुछ समय के लिए सस्पेंड होता है तो पूरा घर सड़क पर आ जाता है । आशा के पिता सरकारी दफतर में नौकरी करते हैं । लेकिन उस पर बीस हजार रूपये के गबन का झूंठा इलजाम लग जाने के कारण जेल होती है । घर का मुखिया जेल जाने से घर की आर्थिक स्थिति दयनीय हो जाती है । आर्थिक अभाव के कारण बच्चे अपने काका के यहाँ मुसीबत में दिन काटते हैं और माँ अपने भाई के घर दुःख में दिन काटती है । आशा के पापा सीधे-सादे निरपराधी थे । लेकिन गलत इल्जाम के

कारण वे टूटजाते हैं। पापा की जेल की वजह से बच्चे भीतर औरबाहर तनाव का अनुभव करते हैं। दूसरी ओर बच्चों के सहपाठी भी उसके पापा के बारे में तरह-तरह की बातें करते हैं। यहाँ तक कि जेल में से आने के बाद पापा बच्चों से बात ही करना छोड़ देते हैं।

मन्नू जी का विचार है कि उच्च वर्ग जिस तरह निम्न वर्ग से पेश आता है, उसे ऐसे पेश नहीं आना चाहिए। उच्चवर्ग के व्यक्तियों को अपनी सामाजिक स्थिति का यह भाव सदा सोचने के लिए विवश करता रहता है,कि अपने से निम्न वर्ग के लोगों के साथ उठने-बैठने व वार्तालाप करने में उनका सामाजिक स्तर गिर तो नहीं रहा है। इसलिए वे गरीब वर्ग के व्यक्तियों के साथ बातें करने में अपना अपमान समझते हैं। 'एक इंच मुस्कान' में कैलाश अमला से कहता है-

"हर किसी के साथ आवश्यकता से अधिक घनिष्ठ हो जाओ,सबसे बराबरी का व्यवहार करो, साधारण से आदमी को अपना आत्मीय बना लो,यह सब तुम्हें शोभा नहीं देता। तुम्हें कम से कम अपनी पोजीशन, अपनी स्थिति का तो ज्ञान होना चाहिए।"[१]

उच्चवर्ग हमेशा निम्नवर्ग की उपेक्षा करता आया है। वह तो गरीबों से उतना दूर रहना चाहता है कि वे लोग मनुष्य ही नहीं हैं। इसलिए तो कैलाश पुनः कहता है-

"और तुम्हारा वहाँ घुल-घुलकर बातें करना , पान खाना...सोचो, शोभा देता है तुम्हें यह सब ? क्या यह हम लोगों के बीच का है।"[२]

लेकिन अमला कैलाश की इस विचारधारा से सहमत नहीं है। वह इस भेदभाव को मानती नहीं है। इसीलिए तो वह कैलाश को कहती है -

"मैं न किसी की हिमायती हूँ, न किसी से नफरत करती हूँ। सबके गुण-दोषों को उनके सही रूप से देखने का प्रयत्न करती हूँ।"[३]

अमला उच्चवर्ग से सम्पर्क रखकर भी कहीं न कहीं विचारगत सभी वर्गों को एक समान मानती है। अगर समाज में विद्यमान तुच्छ असमानता को हटाना

है तो उच्चवर्गीय समाज को गरीबों के प्रतिदृष्टिकोण बदलना होगा। वर्ग समानता के कारण आगे भी अमला कैलाश को कहती है -

"वर्ग और पैसे की कसौटी पर कसकर मैंने आदमी की इज्जत करना नहीं सीखा है। मुझे तो इसी बात पर आश्चर्य होता है कि इतने साल विदेश में रहकर भी तुम आदमी की इज्जत करना नहीं सीखे।"[४]

'शायद' कहानी का 'राखाल' आर्थिक दृष्टि से कमजोर होने के कारण अपने ही घर में अजनबीपन के बोध से संत्रस्त है। एक सीमित आमदनी में व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। न तो वह घर का ढाँचा बदल सकता है, न तो ठीक तरह से लडकियों की शादी कर सकता है। उसकी गरीबी का हृदयस्पर्शी चित्रण निम्नलिखित शब्दों में अंकन हुआ है -

"रो-धोकर माला तो सो गई, पर राखाल को किसी तरह नींद नहीं आई। उसे भी तो नहीं लग रहा कि वह घर में है। अभी भी यहाँ लग रहा है, मानो वह जहाज में बैठा है और उसके और माला के बीच बहुत-बहुत दूरी है।"

'किल और कसक' का कैलाश कर्जदार है। इसलिए कर्ज उतारने के लिए रात-दिन प्रेस में काम करता रहता है। वह गरीबी के कारण बहुत दुःखी है। न तो उसको अपनी पत्नी से सरोकार है, न उसके गृहस्थ जीवन से। दिन-रात मशीनों की घर-घर और खट्-खट् ने उसे मशीन ही बना दिया। जैसे -

"चौबीसों घंटे प्रेस की मशीनों के बीच काम करते-करते कैलाश स्वयं एक मशीन बन गया था, भावनाहीन, रसहीन। उसे न रानी में दिलचस्पी थी न घर में। कर्ज का भूत कोडे लगा-लगाकर, उससे काम करवाता था।"[६]

'खोटे सिक्के' कहानी में मजदूरिन औरत पति के अपाहिज होने के बाद जब मालिक से छोटा-मोटा काम माँगने जाती है तो मालिक की ओर से सहानुभूति मिलने की जगह अपमानित एवं प्रताड़ित होना पड़ता है। उसके पति की टाँग कारखाने में काम करने से कट गई थी। पर मालिक खन्ना साहब बड़े-बड़े भाषण देते हैं तो व्यवहारिक आदमी लगते हैं। जब दूर में आई लड़कियों ने

बात-चीत की तो बड़ी-बड़ी डींगे मारी। लेकिन काम मांगने आई, मजदूरिन औरत को यह कहते हैं-

''हम कर भी क्या सकते हैं ? यों इन लोगों को यहाँ बिठाना शुरू कर दें तो टकसाल अपंगों का अड्डा ही बन जाए। आए दिन ही तो यहाँ ऐसी दुर्घटनाएँ होती रहती हैं।''[७]

'अकेली' कहानी की सोमा बुआ गरीब होने के कारण अनेक मानसिक यातनाएँ भुगतती है। उसके पति साल में एकाद-बार आता है। जवान बेटा मर जाने का सद्‌मा न सह सकने के कारण उसके पति ने संन्यास धारण किया। अब वह अकेली छोटे-मोटे काम करके जीवन-यापन करती है। एक दिन उसके देवर के ससुराल वाले शादी करने उनके ही गाँव में आते हैं तो वह बहुत खुश-खुशाल हो जाती है। उसका देवर तो कब का ही मर गया था। वह अपने समधी के लड़की को भेंट देने के लिए अपने बच्चे की एक ही याद लिए जो गहना पड़ा था,उसे भी बेच दिया। लेकिन समधी वालों ने उसको आमंत्रित ही नहीं किया। पूरे दिन वे नयी साड़ी पहनकर राह देखती रही। लेकिन न्यौता नहीं भेजा गया। उसके पीछे दो कारण जवाबदार हैं- सोमा बुआ की गरीबी और समधी की आर्थिक संपन्नता।

भाई-भतीजेवाद की समस्या : (Nepotism)

'भाई-भतीजेवाद' की समस्या भी सीधे अर्थ से जुड़ी है। लोग योग्य न होते हुए भी भाई-भतीजावाद के जरिये ऊँचे स्थानों पर आसीन हो जाते हैं। इससे योग्य किन्तु इस विषय में निर्बल लोग वंचित रह जाते हैं। भाई-भतीजावाद को प्रश्रय वे ही दे सकते हैं जो संपन्न और सत्ताधीश हैं। अतः कई बार ऐसा हो जाता है कि घर में कुल चार प्राणी हों और चारों काम करते हों और दूसरी ओर ऐसे लोग नौकरी से वंचित रह जाते हैं, जिन्हें वाकई में उसकी आवश्यकता होती है। एक तरफ आवश्यकता से अधिक रोजगारी और दूसरी तरफ बेकारियों

आर्थिक-विषमता की विष-वेल बढ़ती ही रहती है। भाई-भतीजावाद से लगे हुए लोग केवल पैसा और हैसियत बनाने में लगे रहते हैं, फलतः समाज और देश का जो समग्रतया विकास होना चाहिए उसमें गतिरोध पैदा हो जाता हे। इसका व्यंग्यात्मक चित्रण निम्नलिखित दोहे में किया गया है-

''पत्ते बिन सिक्वन्स रमी, बिना सोर्स के ट्राय।

कोशिश तुम कितनी करो, प्रभु करे न सहाय।।''

अर्थात् जिस प्रकार ताश के पत्तों में रमी के खेल में 'सिक्वन्स' का महत्व है, उसी प्रकार बिना किसी 'सोर्स' से नौकरी ढूँढ़ना बेकार है।

आजकल हरेक क्षेत्र में भ्रष्टाचार इतना बढ़ गया है कि योग्यता की गरिमा क्षीण होती जा रही है। गुजराती में कहावत है 'लागवग एज लायकात'। आज सरकारी अफसर तथा उच्च अधिकारी अपने लोगों को नौकरी लगवा देते हैं। यह भाई-भतीजावाद की समस्या कब समाप्त होगी? मन्नू जी इस समस्या का चित्रण सांकेतिक रूप से कुछेक कहानियों में किया है। 'मैं हार गयी' कहानी में नेता द्वारा नौकरी लगाने के बारे में नायिका सोचती हे। वह पिता से बात करती है लेकिन-

''पिताजी की उदार नीति के कारण कोई जगह खाली भी तो रहने पाए। देखा तो सब जगह भरी हुई थी। कहीं मेरे चचेरे भाई विराजमान थे, तो कहीं फुफेरे।''

मन्नू जी 'मै'' पात्र (लेखिका) के माध्यम से 'मैं हार गयी' कहानी में भाई-भतीजावाद समस्या पर करारा व्यंग्य करती नजर आती है। 'यही सच है' कहानी में भी मन्नू जी संजय और दीपा की बातचीत के द्वारा इस समस्या का संकेत किया है। दीपा इंटरव्यु से डरती है, वह कहती है कि कलकत्ता में मुझे कोई जानता भी नहीं। इन्टरव्यु में कैसे-कैसे सवाल पूछेंगे? तब संजय जो जवाब देता है उसमें भाई-भतीजेवाद की समस्या का संकेत मन्नू जी करती हैं वह दीपा से कहता है-

"और देखो, आजकल ये इन्टरव्यु आदि सब दिखावा मात्र होते हैं। वहाँ किसी जान-पहचान वाले से इन्फ्लुएंस डलवाना जाकर।"[१०]

दीपा अपने पुराने मित्र तथा प्रेमी निशीथ को मिलकर वह नौकरी पाने में सफल भी होती है। भाई-भतीजावाद प्राईवेट कंपनी में ही नहीं बल्कि सरकारी क्षेत्रों में यह वाद बढ़ता ही जा रहा है। मन्नू जी ने 'क्षय' कहानी में भी इस समस्या की ओर संकेत किया है। आदर्शवादिता का गुणगान गाने वाले पापा टुन्नी के लिए कुन्ती को सिफारिश करने के लिए कहते हैं-

"एक बार कोशिश करके इसे चढ़वा तो दे तेरी हेडमास्टर साहब से अच्छी जान-पहचान है... वहाँ भी जाए तो एक साल तो बच जाए।"[११]

हालाँकि पापा के इन शब्दों के पीछे अर्थहीनता का कारण विद्यमान है। मनुष्य परिस्थितियों का दास है। 'चित्रलेखा' उपन्यास का यह संवाद चरितार्थ होता है।

आर्थिक असन्तुलन की समस्या :

आर्थिक असन्तुलनता की समस्या हरेक वर्ग की समस्या है। कम पैसा होने से भी व्यक्ति के परिवार का जीवन तहस-नहस हो जाता है। और अधिक रूपये होने से भी व्यक्ति ऐयासी, मक्कार व अनेक दुर्गुणों का शिकार होता है। इस समस्या का चित्रण मन्नू जी 'मैं हार गयी' कहानी में करती हैं। इस कहानी में कवि एवं लेखक के संघर्ष का चित्रण किया है। एक कवि सम्मेलन में पढ़ी गई 'बेटे का भविष्य' नामक कविता से यह कहानी शुरू होती है। कवि ने नेता के ऊपर करारा व्यंग्य किया है - "यह साला तो आजकल का नेता बनेगा।" उसके जवाब में लेखिका कहानी लिखकर कवि के नहले पर दहला मारकर पराजित करना चाहा। वह एक आदर्श नेता की परिकल्पना करके कहानी लिखना आरंभ किया। वह नेता गरीब के घर पैदा होता है। वह बहुत आदर्शवादी था लेकिन आर्थिक विपन्नता ने उसे चोरी करने तक मजबूर किया। घर में बहन बीमार,

पिताजी की मृत्यु, भूख मुंहफाड़े खड़ी थी। लेखिका ने इस नेता के पात्र को खत्म कर दिया-

"मेरे बनाए नेता का ऐसा पतन ! वह चोरी करे, छीः छीः ! और इसके पहले कि चोरी-जैसा जघन्य कार्य करके वह अपनी नैतिकता का हनन करता, मैंने उसका ही खात्मा कर दिया। अपनी लिखी हुई कहानी के पन्नों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये।"[१२]

कहानी में दूसरे नेता की स्थिति, पहले से बिल्कुल अलग रखी। उसके सामने आर्थिक परेशानी नहीं थी। वह करोड़पती के घर में जन्म लेता है। लेकिन आर्थिक सम्पन्नता ही अधःपतन का कारण बन गया और उसने तमाम आदर्शों को ताक पर रख दिया। वह नेता को काबू में करने गयी तब बोला-

"अरे ! तुमने तो मुझे अपनी कलम से पैदा किया है, मेरे इन दोस्तां को देखो। इनकी अम्माओं ने तो इन्हें अपने जिस्म से पैदा किया है। फिर भी वे इनके निजी जीवन में इतना हस्तक्षेप नहीं करते, जितना तुम करती हो। तुमने तो मेरी नाक में दम कर रखा है। ऐसा करो, वैसा मत करो। मानो मैं आदमी नहीं, काठ का उल्लू हूँ। सो बाबा ऐसी नेतागिरी मुझसे निभाए न निभेगी। यह उम्र, दुनिया की रंगीनी और घर की अमीरी। बिना लुत्फ उठाएं यों ही जवानी क्यों बर्बाद की जाए ? यह करके क्या नेता नहीं बना जा सकता ?"[१३]

इस प्रकार एक के लिए आर्थिक विपन्नता पतन का कारण बनता है तो दूसरे के लिए उसकी आर्थिक संपन्नता घातक हो उठती है। इस तरह समाज में प्रमुख समस्या आर्थिक असन्तुलन की है। इस असन्तुलनता के कारण समाज को विकृतियों एवं मूल्यहीनता की जिन्दगी जीना पड़ रही है।

मन्नू जी ने इस समस्या का चित्रण कर दिया है लेकिन उनके पास कोई हल नहीं है। समाज में जब तक आर्थिक विषमता की खाई बनी रहेगी तब तक आदर्श समाज की कल्पना साकार नहीं होगी। आर्थिक असंतुलन एक विशाल समस्या बन रही है उसे रोकने की आवश्यकता है। यथार्थवादी दृष्टिकोण कोण को नकारा

नहीं जा सकता। आज गरीब और गरीब होता जा रहा है और अमीर और अमीरतर होता जा रहा है।

बेकारी की समस्या :

बेकारी राष्ट्र के भाल पर कलंक का टीका है। गिरती आर्थिक स्थिति का परिचायक है। बेकारी, आदमी एवं समाज को अवनति की ओर ले जाता है। बेकारी, देश, समाज, जाति तथा व्यक्ति के लिए घातक है।

बेकारी निठल्लेपन का जनक है। बेकारी की व्याख्या इस प्रकार कर सकते हैं।

''जब काम की कमी और काम करनेवालों की अधिकता हो, तब बेकारी की समस्या होती है। एक पद की पूर्ति के लिए सैकड़ों प्रार्थी 'क्यू' लगाकर खड़े हो जाएं क्यों? क्योंकि वे बेकार हैं। अनार एक है, बीमार सौ हैं। किसको दें?''[१४]

बेकारी बढ़ने का बहुत बड़ा कारण देश की बढ़ती हुई जनसंख्या है। देश में प्रतिवर्ष लगभग डेढ़ करोड शिशु जन्म लेते हैं। दूसरा कारण देश की गलत औद्योगिक-योजना है। सरकार घरेलू उद्योग-धंधे को कम प्रोत्साहन देती है। इन सभी करणों से बेकारी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में उपर्युक्त समस्या चित्रित मिलती है। 'रेत की दीवार' कहानी का इंजीनियर बेकारी ग्रस्त वातावरण से प्रभावित है। वह बेकारी की धज्जियाँ उड़ाते हुए कहता है -

''यार कितना ही पढ़ लो और मगज मार लो। आखिरकार तो बेकार इंजीनियरों की युनियन में ही भरती होना है।''[१५]

बेरोजगारी की समस्या की वजह से लोग भारत छोड़ कर विदेशों में चले जाते हैं। भारत में उनको अपना भविष्य धुंधला नजर आता है। इसीलिए उन

लोगों के अंदर पलायनवृत्ति का भाव पैदा होता है। आज भारत के सैकड़ों लोग अमेरिका, ब्रिटेन,जापान, जर्मनी, अफगानिस्तान, ईरान,ईराक आदि देशों में चले जाते हैं। वहाँ जाकर रोजगारी को ढूँढ़ते हैं। इसका चित्रण आगे भी 'रेत की दीवार' कहानी में किया गया है। रवि अपने भविष्य के बारे में अपनी कही हुई मित्र की बातें याद करते हुए कहता है -

''यहाँ कोई भविष्य नहीं है इन लोगों का। आज-कल सैकड़ों इंजीनियर्स मारे-मारे फिरते हैं.....किसी तरह फॉरेन जाने की तिकड़म भिड़ाओ-कनाडा में बहुत लोगों की आवश्यकता है। इंजीनियर्स के लिए जर्मनी में सबसे ज्यादा स्कोप है। एक बार जाने को मिल जाए तो जिंदगी बन जाए... पर बच्चू, इस सबके लिए पुल और पुश चाहिए। मैरिट को कोई नहीं पूछता। आज दो कौड़ी की भी ...।''[१६]

भारत में बेकारी या बेरोजगार की समस्या के पीछे आवश्यकता से अधिक मशीनीकरण है। जो काम हाथ से हो सकते हैं उसके लिए भी करोड़ों की लागत से मशीनें मँगवायी जाती है। फलतः कई लोग बेकार हो जाते हैं। उद्योगपतियों को मशीनें ज्यादा राश आती हैं, क्योंकि उनके युनियन नहीं होते। गज़ल के एक शेर में कहा गया है-

''ज़िन्दगी दोजख-सी हो जायेगी।

लोगों को और भी मशीनें दो ।।''[१७]

'खोटे सिक्के' कहानी में भी बेकारी की समस्या का चित्रण मिलता है। खन्ना साहब छात्राओं को बताया कि इस कारखाने की मशीनों में काम करना बहुत कठिन है। उसमें जान की जोखिम रहती है। फिर भी यहाँ लोग काम करते हैं। एक छात्रा ने कहा कि ये लोग अपनी जान जोखिम में क्यों डालते हैं। तब भारत की बेकारी पर संकेत करते हुए खन्ना साहब कहते हैं-

''काम करने ! अरे, एक की जगह खाली होती है तो पचासों टूट पड़ते हैं। आप जानती नहीं हमारे देश में इन्सान की जान बड़ी सस्ती है।''[१८]

एक कारीगर की टाँग कट गई थी उसकी पत्नी जब उसी कारखाने में 'खोटे-सिक्के' इकट्ठा करने का काम लेने आती है। वह खन्ना से कहती है-

"मेरे आदमी को बेकार कर दिया... अब वह कहाँ जाएँ...उसे यहाँ काम दे दो हजूर... नहीं तो ..."[१९]

लेकिन खन्ना उसे चपरासी के माध्यम से घसीट कर ले जाने का ऑर्डर देते हैं। इस प्रकार बेकारी आज विकराल रूप धारण कर रही है।

मन्नू जी ने 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास में भी उक्त समस्या का सांकेतिक रूप से चित्रण किया है। इस उपन्यास का अमर स्कॉलरशिप प्राप्त करके विदेश जाना चाहता है, जिससे वह जीवन की आर्थिक समस्याओं से दूर हो सके तथा आधुनिक सुख सुविधाओं का उपभोग कर सके। लेकिन इसमें वह असफल हो जाता है। उसे आर्थिक अभाव तोड़ देता है। उसका आर्थिक अभाव उसके दाम्पत्य जीवन पर भी असर डालता है। इसी कारण उसकी पत्नी के साथ मधुरतम संबंध जोड़ नहीं पाता। बेराजगारी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। बड़े-बड़े विद्यालयों में उच्च शिक्षा प्राप्त करके विद्यार्थी रोजगार विहीन व्यक्तियों में भर्ती हो जाता है। इस ओर हमें और हमारे भारतवासियों को विचार करना चाहिए।

मन्नू जी ने बेकारी की समस्या का चित्रण 'महाभोज'में किया है। 'महाभोज' का बिसू हरिजन है। साथ-साथ स्नातक है। बिस्सू को जब नौकरी नहीं मिली तो अपने आक्रोश को वह हरिजनों और मजदूरों को मिल मालिक के विरुद्ध भड़काकर व्यक्त करता है। उसके पिता हीरा बिस्सू को बेकारी के बारे में कहता है -

"अरे बहुत पढ़े रहा सरकार। चौदह किलास पास। सहर भेजिके पढ़ावा रहा। मेहनत-मजदूरी कीन... रूखी-सूखी खाई पर अपने बिसू को बहुत पढ़ावा रहा साहेब।... अरे का बताई सरकार... बस बचपना रहा हमार बिसुआ का।"[२०]

खाली दिमाग शैतान का घर हमारे बिसू भी ऐसे ही काम करता था। बिसू मजदूरों के मिल मालिकों को कहता कि- (उसके पिता के शब्दों में)

"ऊ सरकार, खेत पे काम करै वाले मजूरन से कहत रहा कि इत्ती कम मजूरी पे काम ना करो। मजूरी बढ़ावै की खातिर लड़े। बेगारी न करो... उधारी पै इत्ता-इत्ता सूद न देव। येई सब ऊ लोगन का बुरा लगत रहा, सरकार।' फिर एक क्षण रुककर बोला, 'अऊर ठीकौ है सरकार, मजूरन का भड़क जाये से... खेतन मा नुकशान जउन हो रहा, औकार कौन सहि है ? बिना मजूरन का कहीं खेती हुई सकै है, सरकार ?"[२१]

बिस्सू की पिता के हीरा की वेदना में एक सच्चे हितों की रक्षा करने वाले बेटे का चित्रण मिलता है। जो हरिजन होते हुए भी पढ़ा और अपने हरिजन भाई के हक के लिए लड़ा लेकिन उसकी आवाज को हमेशा -हमेशा के लिए दबा दी जाती है।

आवास की समस्या :

मनुष्य की तीन प्रमुख आवश्यकता है। रोटी, कपड़ा और मकान (आवास)। गाँव की अपेक्षा शहर को यह समस्या अधिक प्रभावित करती है। बड़े-बड़े शहरों में व्यक्ति आवास न होने की वजह से झोपड़पट्टी या फुटपाथ पर सोते हैं। भारतवर्ष की यह एक बहुत बड़ी समस्या है। स्वस्थ जीवन के लिए अच्छा सा हवादार आवास व्यक्ति को चाहिए। विशेषतः नगरों में आवास की समस्या बड़ी विकट होती जा रही है। गुजराती में एक कहावत है-'रोटलो मणे पण ओटलो न मणे।' अर्थात् शहर में एक बार खाने को मिल सकता है, पर रहने का ठौर पाना बड़ा मुश्किल है।

गाँव में कम बस्ती होने की वजह से वहाँ की हवा कम प्रदूषित होती है। नगरों और महानगरों में आवास एक बहुत बड़ी समस्या है। जिसको दूर करने के लिए हमें प्रयत्न करने चाहिए। आज गाँव टूटते जा रहे हैं। वे सब शहरों की भीड़

में सामिल होते जा रहे हैं। क्योंकि गाँव में रोजगारी कम मिलती है इसी वजह से शहरों की ओर सब लोग जाना चाहते हैं। साथ-साथ औद्योगीकरण अधिकतर शहरों में हुआ। इसलिए लोग शहर की ओर भागते हैं। इस वजह से आवास की समस्या खड़ी होती है। दूसरी ओर भारत की जनसंख्या पर कोई रोकटोक नहीं हैं। आज १०० करोड से भी ज्यादा आबादी हो गयी है। इसलिए आवास की जरूरत तो पड़ेगी ही। सरकार भी निम्न एवं गरीब लोगों के लिए आवास देती है लेकिन बात ऐसी हो जाती है कि -'एक अनार और सौ बीमार।'वही बात हो जाती है।

मन्नू भंडारी जी ने आवास की समस्या का चित्रण भी अपने कथा साहित्य में गौण रूप से किया है।

आवास की समस्या अधिकतर महानगरों में दिखाई देती है। शहरों में शोर-शराबे, भीड़-भाड़ के कारण लोग भेड़-बकरियों की तरह जी रहे हैं। आज शहरों में कितने ही लोग एक ही कमरे में सड़ रहे हैं। मन्नूजी ने आवास की समस्या का चित्रण कुछेक कहानियों में किया है। 'शायद' कहानी उसका श्रेष्ठ उदाहरण है। 'शायद' कहानी के तीन बच्चे एक ही कमरे में जमीन पर सोते रहते हैं। आर्थिक अभाव से टूटती पत्नी एवं राखाल की ऐसी स्थिति में जिंदा लाश की तरह जीवन यापन करना, कितना मार्मिक वर्णन बन पड़ा है -

''कमरे में घुसते ही माला ने मरकरी लाईट जलाई। चौदह फुट लम्बा कमरा और जमीन पर सोते तीनों बच्चे उजागर हो गये। नाक-नकशे के साथ माला के चेहरे की झुर्रियाँ...गालों पर पड़े काले-काले चकते और रूखे-सूखे बालों में से झाँकते कई सफेद बाल...।''[२२]

'कील और कसक' कहानी में छोटे-छोटे आवास में रहते हुए परिवारों का चित्रण करके लेखिका ने यह स्पष्ट कर दिया कि आवास छोटे-होने के कारण लोग कैसे झगड़े करते हैं? उसका यथार्थ चित्रण इस कहानी में हुआ है। रानी अपने छत के ऊपर कोयला रखने नहीं देती वह शेखर की पत्नी को कोयले को

हटाने के लिए कहती है -

"कान नहीं है क्या ? मैं कह रही हूँ कि छत पर कोयले नहीं रहेंगे । गर्मी के दिन हैं, सब सोते-बैठते हैं। यह कोई कोयला रखने की जगह है भला।"[२३]

जब रानी ने कोयले, बोरी में से निकाल-निकाल फेंकना शुरू किया तब शेखर रानी को कहता है-

"हट जाओ यहाँ से, अपने हिस्से की छत पर रहो, नहीं तो हाथ पकड़कर निकाल दूँगा।"[२४]

इस प्रकार महानगरों में आवास छोटे-छोटे होने के कारण अधिकतर समय लोग लड़ने-झगड़ने में निकालते हैं। 'रेत की दीवार' के सकसेना साहब आवास के महत्व को समझाते हुए कहते हैं-

"मकान तो भैया, घर का होना चाहिए। आज का जैसा जमाना है, उसमें आदमी अपना मकान बना ले तो बुढ़ापे के निश्चित हो जाए- बाकी आज के जमाने में किसी का भरोसा नहीं।"[२५]

इस प्रकार आवास की समस्या का चित्रण भी मन्नू जी के कथासाहित्य में मिलता है।

भ्रष्टाचार की समस्या :

भ्रष्टाचार भारत देश की बहुत बड़ी समस्या है। भ्रष्ट का अर्थ है- गिरा हुआ, दूषित। भ्रष्ट आचरण करनेवाला व्यक्ति भ्रष्टाचार को गति प्रदान करता है। भ्रष्टाचार के निम्नलिखित प्रकार हैं।

१. सामाजिक भ्रष्टाचार

२. राजनैतिक भ्रष्टाचार

३. शैक्षिक भ्रष्टाचार

४. आर्थिक भ्रष्टाचार

मन्नूजी के कथासाहित्य में विशेष कर आर्थिक भ्रष्टाचार का चित्रण हुआ है। हर व्यक्ति पैसे के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार रहता है। आज नैतिकता मर-मिटने लगी है। ज्यादा पैसेवाला व्यक्ति भी भ्रष्टाचार करता है। और कम पैसेवाला व्यक्ति भी भ्रष्टाचार करता है। आज हर क्षेत्र में यह समस्या दिन-प्रतिदिन अपना फैलाव बढ़ा रही है। मैं तो कहूँगा कि भ्रष्टाचार आज एक शौक बन गया है। मन्नूजी ने 'एक इंच मुस्कान' में इस समस्या का चित्रण करते हुए अमला के मुख से कहलवाया है -

''आप होटलों में बैठे हुए बीस-बीस दोस्तों के साथ एक-एक रात में हजार-हजार की व्हिस्की पी सकते हैं-लापरवाही से सौ-सौ के नोट दिखाकर नंगी नाचती स्ट्रिप्टीज (कैबरे-आर्टिस्ट) को अपने पास बुलाकर उसे मजबूर करते हैं कि वह आपको जितनी बार 'कीस' करे उतने नोट ले जाए।''[२६]

इस प्रकार यहाँ नारी व लड़कियों को नोट दिखाकर उसका जातीय शोषण किया जाता है। नारी आर्थिक रूप से टूटी हुई होने के कारण विवश हो यह सब करने पर मजबूर होती है। इस प्रकार भ्रष्टाचार आगे बढ़ता है।

'इन्कमटैक्स और नींद' कहानी में मन्नूजी ने भ्रष्टाचार की समस्या का संकेत महिम के कथन के माध्यम से करवाया है-

''इनकमटैक्स वालों की ओर से जाँच हो रही है। अब ये लोग गोलमाल तो दुनिया भर का किए रहते हैं। सारा काम मुझे सौंपा गया है कि जैसे भी हो सारे वही बातों को इस रूप में तैयार करूं कि कोई आँच न आए। बच गए तो एक हजार रूपये देने का वायदा किया है।''[२७]

'रेत की दीवार' कहानी में लेखिका ने शैक्षिक भ्रष्टाचार का चित्रण करते हुए यह स्पष्ट किया है कि आज रूपयों के बिना नौकरी नहीं मिलती। आज का युनिवर्सिटी फर्स्ट गोल्ड मैडालिस्ट विद्यार्थी बी.ए.बी-एड. करके बेकार है, क्योंकि उसके पास पैसे नहीं हैं। आज पैसों के जोर पर लोग बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ खरीदते हैं। और पैसों के ही जोर पर सरकारी नौकरी ऐंठते हैं। इस बदी के

कारण शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। रवि को अपने मित्र की बात याद आती है कि भारत में कोई भी काम करने के लिए-

''पुल और पुश चाहिए, मैरिट को कोई नहीं पूछता।''[२८]

'क्षय' कहानी में भी शैक्षिक भ्रष्टाचार की ओर मन्नू जी ने संकेत किया है। टुन्नी अपनी दीदी को पत्र में अपने हेडमास्टर को सिफारिश न करने की वजह से फेल हो जाने के कारण दुःख प्रकट करता हुआ लिखता है-

''दीदी मेरा मन यहाँ जरा भी नहीं लगाता। सारे समय पापा की और तुम्हारी याद आती रहती है। स्कूलवालों ने भी मुझे आठवीं में ही भरती किया है। उस दिन तुम मेरे हेडमास्टर साहब के पास चली जाती तो कितना अच्छा होता, पूरा एक साल बच जाता। तुमने मेरा इतना सा काम भी नहीं किया, दीदी, पूरा एक साल बिगड़वा दिया ...।''[२९]

हालाँकि उसकी दीदी उस बात का विरोध करती है। मन्नूजी ने आज की कानून व्यवस्था में चल रहे भ्रष्टाचार की ओर भी संकेत किया है। 'सजा' कहानी उसका श्रेष्ठ उदाहरण है। आशा के पिता को बिना कुछ किए चोरी के इल्जाम में गिरफ्तार किये गए तब कान्त मामा भारत की कानून व्यवस्था की पोल खुलता हुआ कहता है-

''आज के जमाने में तो गुनहगार अपने को साफ बचाकर ले जाते हैं। लाखों हजम करके मूँछों पर ताव देते घूमते हैं। फाइलें की फाइलें गायब करवा देते हैं। और एक ये हैं कि बिना गड़बड़ किए सजा भोगते जा रहे हैं।''[३०]

ऐलोपैथी दवा के विरोध की समस्या :

मन्नूभंडारी ने अपने कथासाहित्य में ऐलोपैथी दवा के विरोध की समस्या का चित्रण किया है। ऐलोपैथी की दवाएँ अधिक मंहगी होती हैं, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक भी होती है, लेकिन आज के डॉक्टर अर्थ के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाते हैं। आज-कल के गायनेक डॉक्टर डिलिवरी के

समय प्रेसेन्ट के रिश्तेदारों से पेशन्ट के मर जाने का भय दिखाकर ऑपरेशन के माध्यम से बच्चे का जन्म करवाते हैं और पेशन्ट के रिश्तेदारों से बड़ी रकम ऐंठते हैं। आज डॉक्टर निर्दयी कठोर हो गये हैं। वह अमानवीय हो गया है। मन्नू भंडारी ने अपनी 'इनकमटैक्स और नींद' कहानी में ऐलोपैथिक दवा की भयानकता की ओर संकेत करके होमियोपैथी दवा का उपयोग करने के लिए हिमायत करती है। इसलिए इस कहानी में डॉक्टर दयाल के कथन से कहलवाती है -

''मानव-जाति का कल्याण कम और नाश ज्यादा किया है। एक दवाई को उसका एक्शन कम, रिएक्शन ज्यादा होता है। हमारी होमियोपैथी करेगी तो भला ही करेगी, बुरा करने का सवाल उठता ही नहीं। ओनली एक्शन, नो रिएक्शन।''[३१]

डॉक्टरों की अर्थलोलुपता की समस्या :

आज डॉक्टरों में सेवा की भावना कम और रूपयों की ललक ज्यादा रहती है। एक जमाने में डॉक्टरों को भगवान का दूत समझा जाता था, लेकिन आज डॉक्टर चंद रूपयों के लिए किसी निर्दोष व्यक्ति की किडनी निकालने से भी नहीं डरता और चंद रूपयों के लिए खोटे-खोटे ऑपरेशन करने से भी नहीं डरता। आज वह मानव देह से खिलवाड़ करके वह रूपये ऐंठना चाहता है। आज के अनेक अखबारों में अर्थलोलुप डॉक्टरों का चित्रण आपको मिल ही जाएगा। ऐसे डॉक्टरों का विरोध करती हुई मन्नू भंडारी 'रेत की दीवार' कहानी में बाबू के मुख से कहलवाया है-

''कितना इलाज करवाया पर कोई दवा नहीं लगती। अब परमानन्द वैद्य की दवाई चल रही है। फिर सच पूछो तो भैया, हमारा तो इन डॉक्टरों पर से विश्वास ही उठ गया। मरीज अच्छा हो न हो, मरे चाहे जिए, इन्हें अपनी फीस से मतलब......किसी जमाने में डॉक्टरों का पेशा बड़ा पुण्य माना जाता था, पर

अब तो कसाइयों का हो गया है। मैंने तो सोच लिया है भैया इन डॉक्टरों के हाथ मरने की बजाय मैं तो बीमारी के हाथों मरना ज्यादा पसंद करूँगा।''[३२]

महानगरों के बड़े-बड़े अस्पतालों में मृत व्यक्ति को भी ए.सी. में रखकर उसके झूठमूठ के आपरेशन और उसके उपरांत आपरेशन के तथा दवाइयों के पैसे हड़पने के भी कई किस्से सामने आए हैं। कई बार मरीज की एक 'किडनी' निकाल ली जाती है और उसे ऊँचे दामों पर बेचा जाता है। पिछले दिनों में दिल्ली में इसी प्रकार का एक किस्सा सामने आया था।

आर्थिक अभाव के कारण युवकों में फैलती पलायन वृत्ति :

आज-कल लोग अर्थाभाव के कारण गाँवों से शहरों की तरफ भागे जा रहे हैं और शहरों से निकलकर विदेशों की ओर भागे जा रहे हैं। हालाँकि इससे देश को फायदा ही है, लेकिन लोगों को अगर यही अर्थ भारत में मिलता तो भारत को छोड़ के विदेश न जाना पड़ता।

मन्नू भंडारी ने भी उपर्युक्त समस्या का चित्रण अपने कथा-साहित्य में किया। 'रेत की दीवार' उनका श्रेष्ठ उदाहरण है। रवि अपने मित्र की कही हुई बात याद करता है-

''यहाँ कोई भविष्य नहीं है। इन लोगों का आजकल सैकड़ों इंजीनियर्स मारे-मारे फिरते हैं... किसी तरह फॉरेन जाने की तिकड़म भिड़ाओ-कनाड़ा में बहुत लोगों की आवश्यकता है। इंजीनियर्स के लिए जर्मनी में सबसे ज्यादा स्कोप है। एक बार जाने को मिल जाए तो जिंदगी बन जाए...पर बच्चू, इस सबके लिए पुल और पुश चाहिए। मैरिट को कोई नहीं पूछता। आज दो कौड़ी की भी...''[३३]

आर्थिक अभाव और बेकारी भी व्यक्ति को अंततः पलायनवादी बना देती है। 'कफन' कहानी में प्रेमचंद ने माधव और घीसू का चित्रण किया है। आजकल हमारे समाज में चारों ओर 'माधव' और 'घीसू' उग आये हैं और उसका कारण आर्थिक अभाव और बेकारी ही है। महानगरों में जीवन से पलायन के कारण

आत्महत्याओं के किस्से भी बहुत बढ़ रहे हैं।

आर्थिक रूप से स्वनिर्भर नारी के अहं की समस्या :

नारी आज हर क्षेत्रों में हाथ से हाथ मिलाती हुई आगे बढ़ रही है। नारी स्वनिर्भर तो होती जा रही, लेकिन उसके अंदर इसी स्वनिर्भरता के कारण अहं की शिकार होती जा रही है। इस समस्या का चित्रण लेखिका ने 'आपका बंटी' नामक उपन्यास में प्रमुख रूप से हुआ है। बंटी की माँ शकुन एक अध्यापिका थी, बाद में प्रिंसिपल बन जाती है। उसका पति अजय बिजनेशमैन है। दोनों का जीवन कुछ समय के लिए ठीक तरह से चलता है। लेकिन धीरे-धीरे दोनों के बीच अंतर बढ़ने लगा, क्योंकि दोनों अहंवादी थे। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि स्त्री शिक्षा के बढ़ते प्रचार-प्रसार से आधुनिक स्त्री जहाँ आत्मनिर्भर हुई वहाँ दूसरी ओर एक नयी समस्या को जन्म दिया। पुरानी अनपढ़ और अशिक्षित या रूढ़िवादी संस्कारों से परिपूर्ण नारी होती तो कई बार अपमानजनक समझौतों को सहन करते हुए भी दाम्पत्य की गाड़ी खींच ले जाती थी। वहाँ अब आधुनिक स्त्री आर्थिक दृष्टि से स्वनिर्भर होने पर उस प्रकार के समझौतों को नहीं कर पाती। अगर करती तो भी-

''समझौते का प्रयत्न भी दोनों में एक अंडरस्टैंडिंग पैदा करने के लिए होता था, वरन एक-दूसरे को पराजित करके अपने अनुकूल बना लेने की आकांक्षा से। तर्कों और बहसों में दिन बीतते थे और ठंडी लाशों की तरह लेटे-लेटे दूसरे को दुःखी और बेचैन तथा छटपटाते हुए देखने की आकांक्षा में रातें।''[३४]

इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से स्वनिर्भर शकुन अहं की टकराहट में समझौता न करने की वजह से अपने दाम्पत्यजीवन को खंडित कर बैठी। और बंटी की हालत त्रिशंकु की तरह हो गई। शिक्षित स्त्री-पुरुषों के दाम्पत्य जीवन की स्थिरता पर अब एक प्रश्न चिह्न लग गया है। जहाँ पद या योग्यता में पुरुष के समकक्ष या उससे उत्तम स्थिति में होती है। वहाँ पुरुष की अहं वृत्ति उसे झेल नहीं पाती,

क्योंकि सहस्त्राधिक वर्षों से पुरुष-सत्ताक समाज की मानसिकता स्त्री की तेजस्विता को सहजतया अंगीकृत नहीं कर सकती। परिणाम स्वरूप दाम्पत्य की दीवारें धीरे-धीरे ढहने लगती है। मेरी दृष्टि से शकुन और अजय के बीच होने वाले विवाह विच्छेद का प्रमुख कारण शकुन के आर्थिक स्वनिर्भरता है।

अगर शकुन पति के ऊपर आधारित होती तो शायद तलाक न हो पाता और बंटी दोनों के साथ रहता।

नौकरी पेशा नारी की समस्या :

वर्तमान शिक्षा की बहुत बड़ी उपलब्धि है कि हर क्षेत्र में नौकरी करके नारी अपने परिवार का भरण-पोषण करने लगी। लेकिन हमारा पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था नारी के इस सराहनीय रूप की ओर शंका की नजरों से देखने लगा। नयी परिस्थितियों ने खासतौर से मध्यवर्ग के मानसिक ढाँचे को डगमगा दिया है। यह वर्ग एक ओर चाहता है कि नारी नौकरी करे,घर की देख-भाल करे किन्तु दूसरी ओर इससे वह अपना आत्म सम्मान आहत पाता है। पत्नी का नौकरी करना और उनके पैसों से घर चलाना निकम्मे पति के अहं को बर्दास्त नहीं होता। 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास के अमर और रंजना पति-पत्नी हैं। रंजना नौकरी करती है और घर को भी देखती है। अमर लेखन का कार्य करता है। वह एक नौकरी पेशा नारी की समस्या को लेकर लिखी अपनी एक कहानी रंजना को दिखाता है। तब रंजना उसका जवाब देती हुई कहती है -

''आप चाहते हैं कि पत्नी नौकरी तो करे ही, साथ ही साथ घर की देख-भाल करे, नौकर से सिर मारे, कपड़े संभाले, बटन लगाए, बच्चे को खिलाए... फिर पति की पूरी-पूरी सेवा भी करे- उसका चौका-चूल्हा करे, हाथ-पाँव दबाएँ- फिर भी पति को यही शिकायत रहती है कि न वह पति को देखती है, न घर को। अच्छा , इतना ही नहीं, पति को सारी छूटे हैं- वह दुनिया भर की खुराफातें करें, मटरगस्ती करे, दोस्तों में घूमे और अपने पर चाहे जितना खर्च करे।''[३५]

रंजना अपने पति अमर को चड्ढ़ा और उनकी कमानेवाली पत्नी रतन की कहानी सुनाती है । अमर को यह मालुम हो जाता है कि यह कहानी खास मुझे केन्द्र में रखकर बनायी गई है । रंजना के नौकरी चले जाने के बाद वह सोचने लगता है -

"मेरा काम घर पर बैठकर करने का है और रंजना का स्कूल में जाकर पढ़ाने की बात इतनी ही नहीं है । इसकी जड़ें या परिणतियाँ और भी गहराई में हैं, मेरी हैसियत पति की है और कार्य पत्नी का ।"[३६]

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि पत्नी के नौकरी करने से पति का अहं आहत होता है । यह अहं पति-पत्नी के संबंधों में कड़वाहट लाता है । इस प्रकार नौकरी करनेवाली नारी के सामने एक समस्या बन जाती है ।

अर्थाभाव के कारण मृत्यु का आह्वान :

अर्थ के बिना जीवन अधूरा है । जीवन का कोई मूल्य ही नहीं है । अर्थ के अभाव के कारण कई बार कितने ही लोग पूरे परिवार के समेत आत्महत्या करते हैं । इस प्रकार की आत्महत्या के उदाहरण दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं । आज के अखबार में अर्थ अभाव के कारण कोई न कोई व्यक्ति के आत्महत्या का चित्रण आता ही है ।

'क्षय' कहानी में मन्नू भंडारी ने कुंती के माध्यम से अपने पापा की मृत्यु का आह्वान भगवान से करती है । प्रारंभ में वह एक सत्यनिष्ठ, ईमानदार अध्यापिका थी , किन्तु रोगिष्ठ पापा को ठीक करते-करते उसे भी क्षय हो जाता है । कुंती आर्थिक अभाव से इतनी दुःखी है कि वह स्वयं भगवान को पापा को इस दुनिया से उठाने के लिए आह्वान करती है -

"हे भगवान ! अब तो तू पापा को उठा ले । मुझसे बर्दाश्त नहीं होता । मैं टूट चुकी हूँ ।"[३७]

आज अर्थाभाव के कारण मध्यवर्ग, निम्नवर्ग और उच्च वर्ग के लोग

परिवार समेत खुदकुसी करने के किस्से दिनोंदिन बढते ही जा रहे हैं और यह समस्या भविष्य में विकराल स्वरूप धारण कर सकती है ।

मजदूरों और कृषकों के आर्थिक विकास की समस्या :

आज के मजदूर व किसान अपने अधिकारों के लिए जागरुक एवं सजग हो गये हैं फिर भी पूर्ण रूप से उतने विकसित नहीं हो पाये । कुछ उपन्यासकारों ने अपने कथासाहित्य में किसान की जागरूकता का चित्रण करने का प्रयास किया है । स्वतंत्रता के बाद जमींदारी प्रथा नष्ट हो गई, किंतु गरीबों के आर्थिक विकास में कोई परिवर्तन नहीं हुआ ।

मन्नूजी ने 'महाभोज' उपन्यास में ग्रामीण जनजीवन की राजनैतिक स्थिति कैसी है ? आर्थिक दृष्टि से गाँव कैसे होते हैं, आदि का संकेत किया है । 'महाभोज' के दा साहब ग्रामीणों की समस्या को हल करने का प्रयास भी करता है । वे चाहते हैं कि ग्रामीण लोग भी गृह उद्योग का लाभ लें ।

''चाहता हूँ कि घरेलू-उद्योग योजना को आपलोग ही संभालें । आप लोग ही चलाए । कितना बड़ा सपना था बापू का कि हमारा हर गाँव और हर ग्रामीण आर्थिक रूप से स्वतंत्र बने... समर्थ बने ।''[३८]

गाँव में आर्थिक अभाव अधिकतर किसानों में होता है । गाँवों में एकाद योजनाएँ कर देनेसे गाँव की जागरूकता या विकास नहीं होता है । कृषक चेतना के बारे में मन्नू भंडारी बिन्दा के माध्य से कहलवाती हैं-

''अचानक दा साहब की बातचीत में ही काटकर बिंदा चिल्लाया-'तीस साल से आप लोगों की बातें ही तो सुनते समझते आ रहे हैं , क्या हुआ आज तक ? पेट भरने के लिए अन्न नहीं, आपकी बातें...खाली बातें ।''[३९]

गाँव के विकास की बातें सिर्फ चुनाव के समय में होती हैं ।

'महाभोज' में सरोहा गाँव के चुनाव की स्थिति का उदाहरण देखने लायक है-

''घरेलू- उद्योग-योजना का प्रचार पूरे जोर-शोर के साथ हो रहा है। हमारे लोग घर-घर जाकर समझा रहे हैं और फार्म भरवा रहे हैं।''[४०]

इस प्रकार ग्रामीण कृषक की समस्याओं पर मन्नू जी ने संकेत किया है।

आर्थिक विपन्नता के कारण पति-पत्नी के संबंधों में तीव्र ह्रास की समस्या :

आर्थिक संकट के कारण ढेर सारी समस्याएँ पैदा होती हैं। आर्थिक संकट के कारण व्यक्ति संवेदनाहीन हो , यंत्रवत बन जाता है। इस कारण पति-पत्नी के संबंधों में गिरावट अपने आप आ जाती है। मन्नू जी ने इस समस्या का चित्रण भी किया है।

'शायद' कहानी मन्नू की उपर्युक्त समस्या का प्रतिनिधित्व करती है। 'शायद' का राखाल और माला अपने वैवाहिक जीवन में घुटन महसूस करते है। समुद्री जहाज का मैकेनिक राखाल अपने परिवार बच्चों से मिलना चाहता है। लेकिन भौतिक रूप से अनुपस्थित रहने को विवश होना पड़ता है। लंबे समय के बाद अपने पतित्व का अस्तित्व खोजना चाहता है लेकिन आर्थिक संघर्ष से पिसती हुई माला , शंकर, माँ, कपूर साहब के उपकार तले आ जाती है। इन लोगों का प्रभाव उसके दाम्पत्य जीवन पर भी पड़ा। संवेदनाओं को खत्म करने के लिए विवश माला इन पडोसियों के निर्णय, अधिकार,हस्तक्षेप आदि को स्वीकार करने पड़ते हैं। पति की बाहों के बीच भी उसे मृत बुल-बुल की स्मृति कष्ट देती है। आर्थिक विवशता एवं अभावों से घिरा राखाल का दाम्पत्य जीवन उसे बाहरी दवावों के बीच एक औपचारिक मेहमान बनकर रह जाता है। दोनों के प्रेम संबंधों की स्थिति ऐसी होती है -

''हाथ में में कोई प्रतिक्रिया, कोई हरकत नहीं हुई। राखाल को माला का हाथ बड़ा सर्दऔर निर्जीव-सा लगा और वही ठंडक जैसे उसकी अपनी रगों में समाने लगी।''[४१]

आगे भी लेखिका ने पति-पत्नी के बीच संबंधों में आये गिरावट का संकेत

करती हुई मन्नू जी लिखती हैं-

"राखाल का सारा शरीर शिथिल हो गया। उसे माला पर क्रोध सा आने लगा। जो चली गई, उसका ख्याल है और जो आया, उसकी कोई चिन्ता नहीं। जाने क्यों उसे लगने लगा, जैसे वह किसी और के बारे में सुन रहा है। मानो उस मृत बच्ची से, माला के दुःख से उसका अपना कोई संबंध ही नहीं है।"[४२]

आर्थिक विपन्नता और बढ़ती महत्वाकांक्षा ने पति-पत्नी के बीच तीसरे व्यक्ति का आगमन कर दाम्पत्य जीवन को और अधिक जटिल बना दिया है। 'कील और कसक' कहानी उसका श्रेष्ठ उदाहरण है। इस कहानी की रानी के मन चुभने वाला पति के प्रति उपेक्षित भाव के मूल बदलती आर्थिक विषमता ही है। कर्ज के बोझ के कारण-

"कैलाश स्वयं एक मशीन बन गया था, भावनाहीन,रसहीन। उसे न रानी में दिलचस्पी थी न घर में। कर्ज का भूत कोड़े लगा-लगाकर उससे काम करवाता था।"[४३]

कर्ज के बोझ ने कैलाश को अपने काम में इतना व्यस्त कर दिया कि प्रथम-मिलन की रात्रि के अहसास - 'अहसास रह गये।' कैलाश की उपेक्षा के कारण तथा पैसे के पीछे दौड़ के कारण रानी की प्रशंसा करनेवाला प्रदर्शनी से चूड़ी, बिन्दी लानेवाला शेखर उसके जीवन में प्रवेश करता है। क्योंकि कैलाश के स्वभाव की रुखाई को वह शेखर की सरलता के सहारे बर्दाश्त करने लगी।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि जीवन में आर्थिक समस्याओं का गहरा प्रभाव होता है। वस्तुतः आज के भौतिकवादी युग में तो अर्थ ही एक प्रभुसत्ता हो गयी है और जीवन में अनेक समस्याओं का मूलभूत कारण यदि खोजा जाय तो हमें कोई न कोई आर्थिक समस्या ही नजर आयेगी। मेरे निर्देशक महोदय की व्यंग्यात्मक गज़ल का एक शेर है-

"धरम जुड़ता धन के पीछे,

सत्ता जुड़ती धन के पीछे ।

धन के पीछे भाग रहे हैं सब,

चाट रहे हैं तलवा-तलवा ।।''[४४]

निष्कर्ष :

अध्याय के समग्रावलोकन के पश्चात् हम निम्नलिखित निष्कर्षों तक पहुँच सकते हैं-

१. आर्थिक समस्याओं में प्रमुख समस्या दरिद्रता की है । दरिद्रता मनुष्य का मनुष्यत्व हर लेती है । उसकी गरिमा खत्म हो जाती है ।

२. हमारे देश में सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक भ्रष्टाचार के रहते भाई-भतीजावाद की समस्या खूब फूली-फली है ।

३. इसके कारण आर्थिक असंतुलन की समस्या पैदा होती है ।

४. आजादी के बाद हमारे यहाँ बेकारी की समस्या दिनबदिन बढ़ रही है ।

५. नगरों और महानगरों में आवास की समस्या भी विकट होती जा रही है ।

६. सभी प्रकार की आर्थिक समस्याओं के मूल में भ्रष्टाचार की समस्या है । यह भ्रष्टाचार की समस्या चतुर्मुखी है । सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक एवं आर्थिक भ्रष्टाचार फैला हुआ है । इधर यौन भ्रष्टाचार की समस्या भी अपना बदतर रूप ले रही है ।

७. इन आर्थिक समस्याओं के अतिरिक्त मन्नू जी के कथासाहित्य में हमें ऐलोपेथी दवा के विराध की समस्या, बड़े अस्पतालों में डॉक्टरों का मानवता विरोधी रवैया, आर्थक अभाव के चलते, युवकों में फैलती पलायन वृत्ति, जैसी समस्याएँ भी दृष्टिगत होती हैं ।

८. आधुनिक युग में जहाँ नारी शिक्षा ने उसे आत्मनिर्भर किया है वहाँ इसके

कारण स्त्री-पुरुष के अहं की टकराहट के कारण दाम्पत्य जीवन खंडित हो रहे हैं।

९. नौकरीपेशा स्त्रियों को दोहरे दायित्व का वहन करना पड़ता है। अभी हमारे यहाँ पुरुषसत्ता का ह्रास नहीं हुआ है। स्त्री के नौकरी करने पर भी पुरुष चाहता है कि घर-परिवार में उसका ही वर्चस्व बना रहे। उसके कारण भी पति-पत्नी के जीवन में कई समस्याएँ पैदा होती हैं।

१०. अर्थाभाव के कारण इधर नगरीय जीवन में आत्महत्याओं का परिमाण भी बढ़ रहा है। ग्रामीण जीवन में मजदूरों और कृषकों का शोषण जारी है। इन सभी समस्याओं का आकलन मन्नू जी के साहित्य में भली-भाँति हुआ है।

*

सन्दर्भानुक्रम :

१. राजेन्द्र यादव एवं मन्नू भंडारी - एक इंच मुस्कान, पृ. ७८

२. वही- पृ. ७९

३. वही- पृ. २८

४. वही- पृ. ८२

५. मन्नू भंडारी - नायक, खलनायक, विदूषक ,शायद, पृ. ४२४

६. वही- कील और कसक, पृ. ९३

७. वही- खोटे सिक्के, पृ. १४९

८. प्रो. पारुकान्त देसाई - मानस माला से उद्धृत

९. मन्नू भंडारी - नायक खलनायक विदूषक, मैं हार गई, पृ. २३

१०. वही- यही सच है , पृ. २६३

११. वही- क्षय, पृ. २२२

१२. वही- मैं हार गई, पृ. २३

१३. वही- मैं हार गई, पृ. २५

१४. तनसुखराम- १२५ हिन्दी निबंध, पृ. ३१०

१५. मन्नू भंडारी - नायक खलनायक विदूषक, रेत की दीवार, पृ. ३८२

१६. वही- पृ. ३८२

१७. प्रो. पारुकान्त देसाई-सूखे सेमल के वृंतो पर से उद्धृत

१८. मन्नू भंडारी - नायक खलनायक विदूषक,खोटे सिक्के, पृ. १४८

१९. मन्नू भंडारी - नायक खलनायक विदूषक, खोटे सिक्के, पृ. १४९

२०. मन्नू भंडारी - महाभोज , पृ. ७७

२१. वही, पृ. ११०,११५

२२. मन्नू भंडारी - नायक खलनायक विदूषक, शायद, पृ. ४२३

२३. वही, कील और कसक, पृ. ९७

२४. वही, पृ. ९७

२५. वही, रेत की दीवार, पृ. ३७५

२६. राजेन्द्र यादव एवं मन्नू भंडारी - एक इंच मुस्कान , पृ. ३८

२७. मन्नू भंडारी - नायक खलनायक विदूषक ,इन्कमटेक्स और नींद, पृ. २०१

२८. वही, रेत की दीवार, पृ. ३८२

२९. वही, क्षय, पृ. २२०

३०. वही, सजा, पृ. २५२

३१. मन्नू भंडारी - नायक खलनायक विदूषक ,इन्कमटेक्स और नींद, पृ. २०७

३२. वही, रेत की दीवार,पृ. ३७६

३३. वही, रेत की दीवार,पृ. ३८२

३४. वही, आपका बंटी, पृ. ३१,३२

३५. राजेन्द्र यादव एवं मन्नू भंडारी - एक इंच मुस्कान, पृ. १५८

३६. वही, पृ. १५९

३७. मन्नू भंडारी- नायक खलनायक विदूषक, क्षय, पृ. २२९

३८. वही, महाभोज, पृ. ७३

३९. वही, पृ. ७२

४०. वही, पृ. ६४

४१. वही, नायक खलनायक विदूषक, शायद, पृ. ४२३

४२. वही, पृ. ४२४

४३. वही, कील और कसक, पृ. ९३

४४. प्रो. पारुकान्त देसाई -सूखे सेमल के वृंतों पर से उद्धृत